पितृशाप सुताक्षय योग- दुर्बल सूर्य यदि पंचम भाव में हो, या सूर्य पंचम भाव में मकर या कुम्भ की सन्धि में हो या पापग्रहों के बीच हो तो पितृशाप सुताक्षय योग होता है, जातक को अपने बच्चों की अकाल मृत्यु का सामना करना पड़ता है।

मातृशाप सुताक्षय योग- अष्टमेश और पंचमेश अपने स्थानों का आदान प्रदान कर लें, चन्द्रमा और चतुर्थेश की युति यदि षष्टम भाव में हो, तो मातृशाप सुताक्षय योग होता है। जातक के बच्चों की अकाल मृत्यु, उसकी मां द्वारा दिये गये अभिशाप के कारण हो जाती है।

भ्रातृशाप सुताक्षय योग- लग्नेश तथा पंचमेश की युति अष्टमेश में हो तथा तृतीयेश यदि पंचम भाव में राहु और मंगल के साथ हो तो भ्रातृशाप सुताक्षय योग होता है। जातक के बच्चों की अकाल मृत्यु अपने भाई या बहन द्वारा दिये गये अभिशाप के कारण हो जाती है।

सर्पशाप योग- पंचमेश यदि मंगल हो, जिसमें राहु स्थित हो, वह बुध से दृष्ट या युत हो तो सर्पशाप योग होता है। जातक अपने बच्चों की अकाल मृत्यु भोगता है।

सर्पशाप योग- बृहस्पति या पुत्रकारक, मंगल के साथ में युत हों, साथ ही राहु लग्न में स्थित हो और पंचमेश दु:स्थान पर हो, तो सर्पशाप योग होता है। जातक को अपने बच्चों की अकाल मृत्यु देखनी पड़ती है।

सर्पशाप योग- पंचमेश राहु से युत हो, जबकि शनि पंचम भाव में चन्द्रमा से दृष्ट या युत हो तो सर्पशाप योग बनता है। जातक अपने बच्चों की अकाल मृत्यु भोगता है।

सर्प शाप योग- पंचमभाव में राहु पंचम भाव का स्वामी हो या मंगल पंचम भाव का स्वामी हो और इस भाव में राहु हो तो सर्पशाप योग होता है। जातक को अपने बच्चों की अकाल मृत्यु देखनी पड़ती है।

प्रेतशाप योग- सूर्य और शनि की युति पंचम भाव में हो, चन्द्रमा सप्तम भाव में दुर्बल हो तथा राहु लग्न और बृहस्पति द्वादश भाव में स्थित हों तो प्रेतशाप योग होता है। जातक के बच्चों की अकाल मृत्यु हो जाती है।

चांडाल योग- जन्मकुंडली के किसी भाव में राहु-केतु का योग होने से चांडाल योग बनता है।यह योग जातक को नास्तिक और पांखडी बनाता है। यह योग दरिद्रता को सुचित करता है। मानसिक परेशानियों से घिरा होना इस योग का मुख्य कारण है। जातक किसी पर विश्वास नहीं करता। शुक्र चन्द्र और बुध केन्द्र में साथ हों और राहु लग्न में, तब भी चांडाल योग होता है। जातक अपनी जन्म की जाति से सम्बन्धित कर्तव्यों का पालन कर पाने से वंचित रहता है।

कपट योग- जन्मकुण्डली के चौथे भाव में शनि और बारहवें भाव में राहु होने से कपट योग बनता है।यह योग जिस जातक की कुण्डली में होता है, उस जातक की कथनी और करनी में अन्तर होता है।

क्रोध योग- राहु-केतु या राहु-सूर्य, बुध या शुक्र एक साथ जन्मकुण्डली में लग्न में होने से क्रोध योग होता है।यह योग वाद विवाद तथा लड़ाई-झगड़े बढाता है। इस योग के कारण जातक को आर्थिक कष्ट झेलने पड़ते है।

असुर योग- अष्टम स्थान में शुभ ग्रह हों या शुभ ग्रह इस स्थान को देखते हों और अष्टमेश स्वराशि, उच्चराशि का अस्तंगत न होकर उत्तम स्थान में बैठा हो तो असुर योग होता है।इसका फल निकृष्ट है। जातक स्वार्थी कुकर्मी, दरिद्री, दुराग्रही, चुगलखोर और दूसरों का काम बिगाड़ने वाला होता है। अपने किये हुए दुष्ट कार्यों के परिणाम स्वरुप ऐसा मनुष्य स्वयं हानि और दु:ख उठाता है।

महापातक योग- चन्द्रमा के साथ राहु हो, जिस पर पापग्रह से युत गुरु की दृष्टि हो तो महापातक योग होता है। जातक घोर पापी होता है।